प्रस्तावित शोध–प्रबंध का शीर्षक

उत्तरी बिहार में सामाजिक उत्थान आन्दोलन का विश्लेषण : संस्कृतिकरण के संदर्भ में (1899–1951)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा
के
समाज विज्ञान संकाय (इतिहास)
में

पी–एच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

2021–2022

शोध पर्यवेक्षक
डॉ॰ अभिमन्यु प्रसाद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
G.D. कॉलेज, बेगुसराय

शोध–छात्र
सिद्धार्थ कुमार
PAT- Roll No. E2210129

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा
पी–एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध– प्रारूप
समाज विज्ञान संकाय (इतिहास)

प्रस्तावित शोध–प्रबंध का शीर्षक :

उत्तरी बिहार में सामाजिक उत्थान आन्दोलन का विश्लेषण : संस्कृतिकरण के संदर्भ में (1899–1951)

प्रस्तावना :–

समाज लोगों का संगठित समूह होता है। समाज की संरचना आस–पास की भौतिक परिस्थिति अपने सदस्यों के बौद्धिक स्तर एवं उत्पादन पद्धति पर निर्भर करता है। समय के साथ समाज में परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है अगर कोई समाज समय के साथ स्वयं को परिवर्तित नहीं करता है तो या तो समाज लुप्त (मिस्र का समाज) हो जाता है या प्रगतिहिनता (एस्किमों) शिकार हो जाता है। समाज में कई पद्धति से परिवर्तन होता है। पहला, जब कोई समाज स्वतः स्फूर्त पद्धति से (विचारधारा एवं उत्पादन पद्धति में परिवर्तन के कारण) परिवर्तन करता है। दूसरा, जब कोई समाज किसी दूसरे समाज का अनुकरण (संस्कृतिकरण) के द्वारा स्वयं को परिवर्तित करता है। तीसरा, जब कोई समाज स्वयं को परिवर्तित करने के लिए उपरोक्त दोनों पद्धति का सहारा लेता है। किसी भी समाज में केवल एक पद्धति से परिवर्तन नहीं होता है, समाज को बदलने में तीनों पद्धति की भूमिका होती है। किसी भी समाज के प्रगति के लिए यही जरूरी नहीं है कि

वह स्वयं को समय के साथ परिवर्तित करें, बल्कि यह भी जरूरी है कि वह अपने सभी सदस्यों को विकास का समान अवसर दें तथा सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करें।

लंबे काल से भारतीय समाज (हिन्दू समाज) इन विशेषताओं से वंचित नहीं रहा है। हिन्दू समाज की प्रकृति लचीला रहा है, समय के साथ समाज में परिवर्तन होता रहा है। वर्ण, वर्ण से जाति तथा जाति से उपजाति का विकास सामाजिक परिवर्तन को ही इंगित करता है। भारतीय समाज में न केवल नवीन जाति का ही विकास होता रहा है बल्कि जातियों के सामाजिक स्तर में भी परिवर्तन होता आ रहा है। बिहार में भूमिहार एवं कायस्थ जाति का वर्णन इसका ज्वलंत उदाहरण है। भारतीय समाज की अवनति का प्रमुख कारण, भारतीय समाज का बंद संरचना नहीं है, बल्कि भारतीय समाज का शोषणकारी (जाति व्यवस्था) संरचना, तथा भारतीयों का अंधविश्वास एवं रूढिवादिता है।

ऋग्वैदिक कालीन भारतीय समाज सरल एवं समानता वादी समाज था। प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय (पेशा) चयन की स्वतंत्रता थी। सामाजिक संरचना का आधार कर्म था। जन्म के आधार पर व्यक्ति के साथ किसी भी प्रकार का भेद–भाव नहीं किया जाता था। परंतु जैसे–जैसे समाज में अधिशेष उत्पादन होने लगा, वैसे–वैसे अधिशेष उत्पादन पर नियंत्रण एवं श्रम विभाजन को लेकर समाज में प्रतिस्पर्द्धा होने लगा। प्रतिस्पर्द्धा के कारण समाज जटिल एवं सोपानीकृत होने लगा। उत्तर वैदिक काल आते–आते

सामाजिक पहचान **का** आधार कर्म के स्थान पर जन्म बन गया। असमानतावादी सामाजिक व्यवस्था को वैधता प्रदान करने के लिए दैवीय शक्ति का प्रयोग किया गया। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में पहली बार वर्ण–व्यवस्था की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। वर्ण–व्यवस्था विशेषाधिकार (पहला स्थान पर ब्राह्मण, दूसरे स्थान पर क्षत्रिय, तीसरे स्थान पर वैश्व चौथे स्थान पर शुद्र तथा सबसे निचले स्थान पर पंचम वर्ण या अछूत) पर आधारित एक सोपानिकृत व्यवस्था है, जिसमें ऊपर से निचे जाने पर विशेषाधिकार कम होता है एवं कर्त्तव्य में वृद्धि होता है तथा निचे से ऊपर जाने पर विशेषाधिकार में वृद्धि एवं कर्त्तव्य में कमी होता है। वर्ण–व्यवस्था का स्थान आगे जाति व्यवस्था ने ले लिया। वर्ण–व्यवस्था को वैधता प्रदान करने के लिए दैवीय सिद्धांत का निर्माण तो किया ही गया था तथा वर्ण के साथ कर्म काण्ड एवं रीति–रिवाज को भी जोड़ दिया गया था। जन्म के साथ वर्ण की सदस्यता तो मिल जाती थी, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को अपने वर्ण की सदस्यता को बनाये रखने के लिए निश्चित कर्मकाण्ड एवं रीति–रिवाज कर पालन करना अनिवार्य था। कर्म–काण्ड एवं रीति–रिवाज का पालन नहीं करने या उल्लंघन करने पर व्यक्ति को उसके वणर्ण के सदस्यता से वंचित कर दिया जाता था। धर्मशास्त्रों (मनुस्मृति इत्यादि) के अनुसार व्यक्ति का जन्म शूद्र वर्ण में होता है, परन्तु उपनयन संस्कार के उपरांत व्यक्ति द्विज (सवर्ण) बनता है। आरंभ से ही समाज के उच्च जाति (सवर्ण) ने विशिष्ट कर्म–काण्ड एवं रीति–रिवाज पर एकाधिकार स्थापित कर लिया तथा शूद्र एवं अछूत वर्ण के लोगों को इन संस्ककारों से वंचित रखा।

जाति व्यवस्था ने न केवल समाज के निचले वर्ण (अछूत, शूद्र) को अमानवीय जीवन जीने के लिए बाध्य किया बल्कि समाज के उच्च वर्ण के भी विकास को अवरूद्ध कर दिया।

ऐसा नहीं है, कि भारतीय समाज ने सर्व–सहमति से शोषणकारी व्यवस्था को स्वीकार कर लिया था, जितना प्राचीन जाति व्यवस्था है, उतना ही प्राचीन जाति व्यवस्था के विरोध (समाज सुधार आन्दोलन) की परम्परा है। सर्वप्रथम बिहार की ही भूमि से बुद्ध एवं महावीर के द्वारा शोषणकारी सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दिया गया तथा समानतावादी समाजिक व्यवस्था के निर्माण का प्रयास किया गया। आगे कबीर, रविदास, गुरु नानक इत्यादि संतो के द्वारा भी समाज सुधार आंदोलन चलाया गया। परंतु जाति–व्यवस्था कमजोर होने के बजाय समय के साथ अपने जड़ को मजबूत करता ही गया। भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ समाज सुधार के क्षेत्र में एक नवीन युग कर सूत्रपात हुआ। ब्रिटिश शासन एवं पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क ने भारतीय समाज में नवीन ऊर्जा का संचार किया। पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क ने भारतीय बौद्धिक वर्ग को भारतीय समाज के पत्तनशीलता का आभास कराया। भारतीय बौद्धिक वर्ग के द्वारा न केवल भारतीय समाज के पत्तन के कारणों की खोज की जाने लगी, बल्कि भारतीय समाज के प्रगति के लिए प्रयत्न भी किया जाने लगा, जिसे भारतीय पूणर्जागरण आंदोलन का उदय हुआ। भारतीय बौद्धिक समाज के एक वर्ग (ब्रह्म समाज, यंग बंगाल आंदोलन इत्यादि) ने जहाँ पश्चिमी संस्कृति के

मापदंड पर भारतीय समाज का निर्माण करने का प्रयत्न कर रहा था, वही दूसरी ओर एक वर्ग (आर्य समाज) भारतीय संस्कृति को आधार बनाकर भारतीय समाज का प्रगति करना चाह रहा था। आर्य समाज ने एक ओर जहाँ भारतीय समाज को मजबूत बनाने के लिए अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता का विरोध किया, वही दूसरी ओर अछूत एवं शूद्र वर्ण को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए सांस्कृतिकरण आंदोलन का सूत्रपात किया। अभी तक जहाँ समाज के अछूत एवं पिछड़े वर्ग निष्क्रिय थे, अब उनमें भी चेतना का संचार होने लगा। सदियों से वंचित वर्ग ने न केवल उन परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों का विरोध करना आरम्भ किया, जो उनके दयनीय स्थिति का कारण था, बल्कि स्वयं के लिए समाज में सम्मानजनक स्थिति का माँग करना भी आरम्भ किया। दलित एवं पिछड़ों ने अपने मुक्ति के लिए कई मार्गों का सहारा लिया। एक ओर जहाँ महराष्ट्र में ज्योति राव फूले के द्वारा हिन्दू सामाजिक व्यवस्था को अस्विकार किया जा रहा था, वही दूसरी ओर बिहार में समाज के निचले जाति के द्वारा अपने उत्थान के लिए फूले के विपरीत हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में अपने लिए उच्च स्थान की माँग की जा रही थी।

20वीं शताब्दी में बिहार बंगाल प्रांत का ही भाग था। बिहार में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था अधिक रूढ़िवादी एवं कट्टरपंथी थी। बिहार की जनसंख्या के अधिकांश भाग (लगभग 90 प्रतिशत) या तो पिछड़ा था या दलित। बिहार के सामाजिक व्यवस्था पर भूमिहार, कायस्थ, राजपूत और ब्राह्मण का प्रभुत्व

था (बिहार की जनसंख्या का 10 प्रतिशत)। जब बंगाल में राजा राममोहन राय के द्वारा समाज सुधार का कार्य आरम्भ हुआ तो उसके सम्पर्क में बिहार भी आया। ब्रह्म समाज के द्वारा बिहार में समाज सुधार के लिए ब्रह्म समाज का शाखा खोला गया, परंतु बिहार में उसे सफलता नहीं मिली। बिहार में सामाजिक सुधार का कार्य वास्तविक रूप से 9 नवम्बर 1879 से शुरू हुआ, इसी दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बाबू माघो लाल का यज्ञोपवित संस्कार सम्पन्न कर बिहार में संस्कृतिकरण आन्दोलन (जनेऊ आंदोलन) की नींव रखी थी। सन् 1899 ई॰ में आर्य समाज की शाखा पटना जिले के मनेर स्थित हाथी टोला में खोला गया। आर्य समाज के प्रचार के परिणामस्वरूप पिछड़ी जाति (यादव, कुर्मी, कुशवाहा इत्यादि) के द्वारा जनेऊ धारण किया जाने लगा, जिसका विरोध सवर्ण जाति के द्वारा किया जाता था। धीरे–धीरे जनेऊ आंदोलन सवर्ण जाति एवं पिछड़े जाति के बीच उग्र तनाव का रूप लेने लगा, जो कभी–कभी हिंसक रूप धारण कर लेता था (लाखो चक की घटना इसका ज्वलंत उदाहरण है)। यह आन्दोलन शीघ्र ही पटना से मुधुबनी, दरभंगा, मधेपुरा एवं शाहाबाद के क्षेत्र में फैल गया। आरंभ में यह आन्दोलन स्वतः स्फूर्त था परंतु आगे जाकर जातिगत संगठनों का रूप लेने लगा। त्रिवेणी संघ का उदय इसी आन्दोलन का परिणाम था। बिहार में एक ओर जहाँ पिछड़े जाति के द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए जनेऊ आन्दोलन के द्वारा उच्च सामाजिक स्थिति का दावा किया जा रहा था, वही दूसरी ओर गाँधीवादी तरीके से (राजेन्द्र प्रसाद, जगजीवन राम इत्यादि) के द्वारा सामाजिक उत्थान का प्रयत्न किया जा रहा था। 20वीं शताब्दी के बिहार के

सामाजिक उत्थान आन्दोलन में बिहार के सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन के नवीन युग का आरम्भ कर दिया था। स्वतंत्रता मिलने के उपरान्त भारतीय संविधान के अनुच्छेद (14,15,16,324) के द्वारा सामाजिक भेद–भाव को समाप्त कर दिया गया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 के द्वारा अस्पृश्यता का उन्मूलन कर दिया गया, बिहार भारत का प्रथम प्रांत बना जिसने 1951 ई० में अस्पृश्यता को दंडनीय बनाने के लिए कानून बनाया। बिहार ही भारत का प्रथम प्रांत बना जिसने 1967 ई० में एक दलित (भोला पासवान शास्त्री) को अपना मुख्यमंत्री चुना। इन क्रांतिकारी परिवर्तनों के उपरांत भी बिहार के सामाजिक व्यवस्था में जाति एवं अस्पृश्यता का बोल–बाला बना हुआ है। बिहार के पदासीन मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के साथ मधुबनी में अस्पृश्यता कर जो व्यवहार किया गया, वह बिहार के सामाजिक व्यवस्था के अंतरविरोध को व्यक्त करता है। बिहार को समझने के लिए बिहार के सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक उत्थान आन्दोलन का अन्वेषण करने की आवश्यकता है। उपरोक्त उद्देश्य से ही, प्रस्तावित शोध–प्रबंध सम्बन्धित है।

शोध समस्या :

i. बिहार में सामाजिक उत्थान आन्दोलन का स्वरूप क्या था?

ii. बिहार के सामाजिक उत्थान आन्दोलन में संस्कृतिकरण आन्दोलन क्या भूमिका रहा?

iii. क्या संस्कृतिकरण आन्दोलन अपने मूल उद्देश्य में सफल रहा ?

iv. सामाजिक उत्थान आन्दोलन के विभिन्न धाराओं के बीच क्या संबंध था?

v. बिहार में सामाजिक उत्थान के प्रभावी मार्ग क्या हो सकता है?

साहित्य समीक्षा :

प्रस्तावित शोध प्रबंध में बिहार के सामाजिक व्यवस्था, बिहार के सामाजिक उत्थान आन्दोलन का अध्ययन किया जाएगा। इस विषय पर बड़े पैमाने पर प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत की उपलब्धता है। परन्तु इस विषय पर बहुत कम शोध हुआ है। अभी तक बिहार में व्यक्ति को आधार बना कर (जगजीवन राम, कर्पूरी ठाकुर, इत्यादि) शोध हुआ है। इस विषय पर श्रीकांत (बिहार में सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न आयाम) हेतुकर झा (बिहार में निचली जाति ऊँची जाति के जमींदार : दो समूहों के बीच सांस्कृतिकरण और विरोधाभाष का विश्लेषण) के द्वारा अध्ययन किया गया है। परन्तु उपरोक्त अध्ययन में बिहार के सामाजिक उत्थान आन्दोलन का गहन अध्ययन नहीं किया गया है। चौधरी जे॰ ए॰ पी॰ मेहता ने त्रिवेनी संघ का बिबुल पुस्तक में पिछड़े एवं दलित वर्गीय राजनीतिक चेतना पर प्रकाश डालते हैं, परन्तु उसका गहन विश्लेषण प्रस्तुत नहीं करते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर एम॰ एन॰ श्रीनिवास के द्वारा संस्कृतिकरण के द्वारा समाजिक उत्थान पर अध्ययन कियागया है, परन्तु बिहार पर विशेष अध्ययन नहीं किया गया है। प्रस्तावित शोध का उद्देश्य इन सीमाओं को दूर कर, बिहार के सामाजिक उत्थान

आन्दोलन का एवं बिहार के सामाजिक व्यवस्थ का गहन एवं वैज्ञानिक विश्लेषण करना है।

शोध के उद्देश्य, महत्व एवं प्रसांगिकता :

i. 20 वीं शताब्दी के बिहार के सामाजिक व्यवस्था को समझना।

ii. बिहार के सामाजिक उत्थान आन्दोलन के विवेचन करना।

iii. सामाजिक उत्थान आन्दोलन के प्रभाव का विश्लेषण करना।

iv. यह शोध बिहार के सामाजिक व्यवस्था के बारे में बेहतर समझ विकसित करेगा।

v. यह शोध सामाजिक उत्थान के लिए रणनीति के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

प्रस्तावित शोध प्रबंधन का मूल उद्देश्य बिहार के सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक उत्थान आन्दोलन के बारे में नवीन जानकारी प्रापत करना है, इससे ना केवल समकालीन बिहार को समझा जा सकेगा बल्कि सामाजिक उत्थान के लिए रणनीति बनाने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही समाज को अवलोकित करने की नवीन दृष्टि विकसित होगी।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तावित शोध प्रबंधन के अंतर्गत 1899 ईस्वी से 1951 ईस्वी के बीच उत्तरी बिहार के सामाजिक व्यवस्था समाज सुधार आन्दोलन के स्वरूप एवं संस्कृतिकरण आन्दोलन का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही इस शोध के

अंतर्गत सामाजिक उत्थान आन्दोलन के विभिन्न धाराओं का आपस में क्या संबंधन था एवं इसका बिहार के सामाजिक व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसका अध्ययन किया जाएगा।

शोध अध्ययन विधि :

सामाजिक विज्ञान (इतिहास) जैसे विषय के लिए कोई एक शोध विधि उपयुक्त नहीं होगा, किसी एक शोध विधि पर निर्भरता शोध के दायरे को सीमित कर देगा। प्रस्तावित शोध प्रबंध का संपादन गुणात्मक परिणात्मक शोध विधि के द्वारा किया जाएगा।

स्रोत सामग्री की उपलब्धता :

प्रस्तावित शोध प्रबंध को वस्तुनिष्ठ एवं गुणवत्ता पूर्ण रूप से सम्पादित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्रोत :

प्रस्तावित शोध प्रबंध से संबंधित बड़े पैमाने पर प्राथमिक स्रोत उपलब्ध है। इस शोध के अंतर्गत जनगणना रिपोर्ट, समाचार पत्र, व्यक्तिगत विचार (हिन्द स्वराज, त्रिवेनी संघ बिबुल, ज्योति राव फुलें रचनावली, अंबेडकर वाक्यमया, इत्यादि), अभिलेखागार (पटना दरभंगा, दिल्ली इत्यादि), जिलाधिकारी के रिपोर्ट, थाना रिपोर्ट इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा।

द्वितीयक स्रोत :

प्रस्तावित शोध प्रबंध संपादन निम्नलिखित अध्यायो में विभक्त कर किया जाऐगा। से संबंधित बड़े पैमाने पर द्वितीयक स्रोत उपलब्ध है। इस शोध अध्ययन के अंतर्गत मोहन दास नेमीशराय (भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास), रामशरण शर्मा (प्राचीन भारत में शूद्र), प्रमोद रंजन (जाति व्यवस्था और पितृसत्ता), एस॰ एन॰ माइकल (आधुनिक भारत में दलित दृष्टि एवं मूल्य) इत्यादि का अध्ययन किया जाएगा।

परिकल्पना :

i. सामाजिक उत्थान आन्दोलन का बिहार के सामाजिक व्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
ii. समाजिक उत्थान आन्दोलन विभिन्न धारा का आपस में कोई संबंध नहीं था।
iii. संस्कृतिकरण आंदोलन का बिहार के सामाजिक आर्थिक एवं राजनीति व्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

शोध कार्य योजना :

प्रस्तावित शोध प्रबंध का सम्पादन निम्नलिखित **अध्यायों में विभक्त कर किया जाएगा** :-

1. समाज एवं संस्कृतिकरण
2. बिहार में सामाजिक उत्थान आन्दोलन की परम्परा
3. 20वीं शदी में बिहार की सामाजिक व्यवस्था

4. भारत के प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं का सामाजिक उत्थान के प्रति दृष्टिकोण
5. आर्य समाज एवं बिहार में संस्कृतिकरण आन्दोलन
6. बिहार में संस्कृतिकरण (जनउ) अंनदोलन की स्वतः स्फूर्त धारा
7. समाज सुधार आन्दोलन की गाँधीवादी धारा
8. सामाजिक उत्थान आन्दोलन के प्रभाव का विश्लेषण

संदर्भ ग्रंथ सूची :

प्राथमिक :

अप्रकाशित (राज्य अभिलेखागार, बिहार, पटना)

1. फाइल नं॰ 7 / 1926
2. फाइल नं, 60 / 1924
3. फाइल नं. 238 / 1923
4. फाइल नं. 421 / 1919
5. फाइल नं. 317 / 1932
6. फाइल नं. 38 / 34
7. फाइल नं. 317 / 1932
8. फाइल नं. 421 / 1919

प्रकाशित :

1. हंटर, डब्ल्यू. डब्ल्यू; ए स्टेटिस्टिकल एकाउण्ट ऑफ बंगाल; लंदन, 1877
2. आइ. एल. आर. XI कलकत्ता, 1885
3. आइ. एल.आर. XVII, कलकत्ता, 1890
4. ग्रियर्सन, जार्ज, ए., नोट्स ऑन दि डिस्ट्रिक्टस ऑफ गया (1893)

5. हरिजन सेवक संघ की वार्षिक रिपोर्ट
6. बिहार कांग्रेस की वार्षिक की वार्षिक रिपोर्ट
7. जनगणा रिपोर्ट (भारत सरकार)
8. दि डिप्रेस्ड क्लासेस; ए क्रोनोलॉजिकल डाक्यूमेंटेशन।

सहायक सामग्री :

1. विद्यालंकर, डॉ॰ सत्यकेतु (प्रधान संपादक) आर्य समाज का इतिहास, दिल्ली
2. अंबेडकर, बाबा साहब, संपूर्ण वांड्मय, नई दिल्ली 2000
3. देसाई, महादेव, गाँधीजी इन इंडियन विलेज
4. कुमार अनिल, अनटचेविलिटी रिमूवल मूवमेंट इन बिहार, आई. एच.सी. अलीगढ़, 2000
5. दत्त, के॰ के॰, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन बिहार, खण्र– 11, पाटना, 1957
6. झा, हेतुकर, लोअर कास्ट पीजेण्ड्स ऐण्ड अपर कास्ट जमींदार्स इन बिहार (1921–25) : एन एनेलिसिस ऑफ संस्कृटाइजेशन ऐण्ड कसट्राटिक्शन बिटविन टू ग्रुप्स
7. प्रसन्न कुमार चौधरी, बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम (1912–1990)
8. दास गुप्ता, टी॰ सी॰, आस्पेक्ट्स ऑफ बंगाली सोसायटी फ्रॉम ओल्ड बंगाली लिट्रेचर, कलकत्ता, 1935

9. बुकानन, फ्रांसिस, ‘एन एकाउण्ट ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ भागलपुर इन 1810–11, पटना, 1939

– एन एकाउण्ट..........बिहार ऐण्ड पटना इन 1811–12

– एन एकाउण्ट ....शाहाबाद इन 1812–13, पटना

10. राम, जगजीवन; स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स ऑफ जगजीवन राम, पटना

पत्र–पत्रिकाएँ :

1. मॉडर्न बिहार
2. दलित मित्र
3. दि सर्चलाइट
4. चैतन्य चंद्रिका
5. दि इंडियन नेशन
6. हरिजन

शोध पर्यवेक्षक
डॉ अभिमन्यु प्रसाद
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
G.D. कॉलेज, बेगुसराय

शोधार्थी
सिद्धार्थ कुमार
Pet Roll No. E2210129
वर्ग क्रमांक– 21